म्यांमार की कृषि

म्यांमार एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ कुल क्षेत्रफल के 16% भाग कृषि कार्य किया जाता है। म्यांमार में वर्षा की पर्याप्त मात्रा होने के कारण सिन्चाई की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती है। म्यांमार में कुल बोये गये क्षेत्र के मात्र 18% भाग पर ही सिन्चाई की आवश्यकता पड़ती है।

म्यांमार में तीन प्रकार की कृषि की जाती है :–

(1) शुष्क प्रदेशीय कृषि
(2) डेल्टा प्रादेशीय कृषि
(3) पर्वत प्रदेशीय कृषि

(1) शुष्क प्रदेशीय कृषि म्यांमार की सबसे महत्वपूर्ण कृषि है। इस प्रकार की कृषि म्यांमार के मध्यवर्ती मैदानी भागों में जहाँ वर्षा की मात्रा औसत 100 cm से कम है। इस क्षेत्र कृषि करने के लिए सिन्चाई की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र उत्पादन किये जाने वाले प्रमुख फसल कपास, मटर, ज्वार, बाजरा, तिलहन, मकई तथा मूंगफली है। इस प्रकार के कृषि कार्य सालिन, सागैन, पाले तथा रवीबो के मैदानी भागों में किया जाता है। यह कृषि आज भी यहाँ प्राचीन ढंग से ही की जाती है।

(2) डेल्टा प्रादेशीय कृषि नदियों के डेल्टाई प्रदेशों में की जाती है चावल इस क्षेत्र प्रमुख कृषि है। क्योंकि इस क्षेत्र में वर्षा मात्रा अधिक है तथा यहाँ की मिट्टी भी उपजाऊ है। यह क्षेत्र म्यांमार

Scanned by TapScanner

के कुल चावल उत्पादन का 80% भारी से होता है म्यांमार कुल चावल उत्पादन के 60% भाग दूसरे देशों में निर्यात करता है। इसके अतिरिक्त जूट, रबर, तथा आलू का उत्पादन भी किया जाता है।

(3) म्यांमार में इस प्रकार की कृषि उच्च पर्वतीय मैदानों पर सीढ़ीनुमा खेत बनाकर तथा नदियों की घाटियों में की जाती है। इस प्रकार की कृषि उदरपूर्ति के लिए की जाती है। इसके के अन्तर्गत चावल, कपास आलू की कृषि की जाती है।

चावल, कपास, मूंगफली, जूट, रबर चाय, गन्ना, तिलहन तथा तम्बाकू म्यांमार की प्रमुख फसलें है।

Scanned by TapScanner